ॐ

सदानीरा

विश्व कविता और अन्य कलाओं की पत्रिका

वसंत 2019

व ज हें

अंक-21 | वर्ष-6
अक्टूबर 2018-मार्च 2019
ISSN 2321-1474

प्रधान संपादक
आग्नेय
संपादक
अविनाश मिश्र

आवरण : शैलेंद्र साहू | फूल, पत्ती और मैं
कवियों-लेखकों की तस्वीरें गूगल से

sadaneera.com /Sadaneera

प्रधान कार्यालय :
बी-207, चिनार वुडलैंड,
कोलार रोड, भोपाल-462016
मध्य प्रदेश
फ़ोन : 0755-2424126, 9303139295
agneya@sadaneera.com

संपादकीय संपर्क :
171, गिरधर एंक्लेव,
साहिबाबाद, ग़ाज़ियाबाद-201005
उत्तर प्रदेश
मो. : 9818791434
editor@sadaneera.com

रचनाएँ भेजने के लिए :
submit@sadaneera.com

सहयोग-सदस्यता

एक अंक के लिए : 100 रुपए, 5 डॉलर
संस्थाओं के लिए : 700 रुपए
वार्षिक सदस्यता : 500 रुपए
आजीवन सदस्यता : 10,000 रुपए

'सदानीरा' डाक से मँगाने के लिए सदानीरा के नाम संपादकीय पते पर चेक/ड्राफ्ट भेजें या देना बैंक (अरेरा कॉलोनी, भोपाल, IFSC : BKDN0811184) के करंट अकाउंट नंबर : 118411023949 में राशि जमा करके हमें ईमेल या फ़ोन पर सूचित कर दें।
© सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पत्रिका का कोई भी हिस्सा किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम, जिसमें सूचना संग्रहण और सूचना संसाधन की विधियाँ सम्मिलित हैं, द्वारा प्रकाशक अथवा संपादकों की पूर्वानुमति के बिना पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता सिवाय एक समीक्षक के जो समीक्षा में संक्षिप्त अंशों को उद्धृत कर सकता है। प्रकाशित कृतियों का कॉपीराइट लेखकों / अनुवादकों / कलाकारों का है। भेजी गई रचनाओं पर अगर सात दिन के भीतर कोई उत्तर नहीं मिलता, तब रचनाकार उन्हें अन्यत्र भेजने के लिए स्वतंत्र हैं। मुफ़्त अंक और नमूना प्रति भेजने की सुविधा नहीं है, कृपया इस संदर्भ में कोई फ़ोन, ई-मेल या पत्र-व्यवहार न करें। 'सदानीरा' की सदस्यताएँ केवल प्रिंट इश्यू के लिए हैं। प्रिंट में अनुपलब्ध कुछ अंक डिजिटल फॉर्म में sadaneera.com के **पूर्व अंक** सेक्शन में हैं और वहाँ निःशुल्क पढ़े और सहेजे जा सकते हैं।

क्रम

वसंत 2019

व ज हें

शुरुआत 6

आग्नेय

स्पैनिश कविता 9

रोबेर्तो ख्वार्रोस

अनुवाद और प्रस्तुति : मोनिका कुमार

अँग्रेज़ी कविता

मैरी ऑलिवर 37

अनुवाद : रीनू तलवाड़

ओक्टावियो क्विंटानिला 49

अनुवाद : विपिन चौधरी

अज़रबैजानी कविता 58

वाक़िफ़ सामेदओलू

अनुवाद : निशांत कौशिक

सूफ़ी कविता 62

सुमन मिश्र

पाठ

टेड ह्यूज़ की कविता 'हॉक रूस्टिंग' 69

एंड्रयू स्पेसी

अनुवाद : अनुराधा सिंह

शमशेर की कविता और स्त्री-सौंदर्य 77

देवीलाल गोदारा

87 **बातें**

अभिषेक मजूमदार से अमितेश कुमार

93 **ग्राफिक गल्प**

मीनाक्षी जे — जे सुशील

106 **उर्दू कविता**

साक़ी फ़ारुक़ी

लिप्यंतरण: अनुराधा शर्मा

109 **बांग्ला कविता**

प्रमिता भौमिक

बांग्ला से अनुवाद : उत्पल बैनर्जी

114 **चिट्ठियाँ**

फ्रेडरिक शिलर

अनुवाद और प्रस्तुति : प्रत्यूष पुष्कर

126 **हिंदी गद्य**

शिरीष खरे

हिंदी कविता

137 सुधांशु फ़िरदौस

159 विजया सिंह

164 **सौ शब्द**

अविनाश मिश्र

आत्मा का अन्न

आग्नेय

मेरे एक युवा मित्र-लेखक हैं। कुछ रोज़ पहले मैंने उन्हें एक संदेश भेजा कि मेरे प्रदेश में सत्ता-परिवर्तन हो गया है और अगर वह चाहें तो सांस्कृतिक सत्ता प्रतिष्ठानों में उन्हें किसी उचित पद पर पदस्थ करने के लिए प्रयत्न किए जा सकते हैं। उन्होंने जो उत्तर दिया, उसने ही मुझे इस संपादकीय का शीर्षक चुनने में मदद की। उनका उत्तर था, ''मैं जहाँ हूँ वहीं ख़ुश, दुखी और जागरूक एक साथ हूँ। मैं क्या करूँगा कोई पद लेकर जिनकी दिलचस्पी हो वे लें। मैं जो कर रहा हूँ, वह मेरी थकान दूर करता है और वह मेरी आत्मा का अन्न है।'' वह कविता-केंद्रित एक पत्रिका का अवैतनिक संपादन करते हैं।

उनके इस कथन से मुझे फ़्रांत्स काफ़्का की कहानी 'हंगर आर्टिस्ट' की याद आ गई। इस कहानी का नायक हमेशा भूखे रहने के प्रतिमान तोड़ता रहता है। जब उससे कोई पूछता है कि वह खाना क्यों नहीं खाता और क्यों लगातार भूखा रहता है, तब वह इस प्रश्न के उत्तर में कहता है कि ऐसा नहीं है कि वह भूखा रहना चाहता है। दरअसल, वह जो अन्न खाना चाहता है, वह अन्न उसे नहीं मिलता है। शायद, वह भी आत्मा के अन्न की तलाश में था।

देखा जाए तो हम सब आत्मा के इस अन्न की तलाश में रहते हैं, लेकिन हम में से ज़्यादातर लोग इसकी तलाश करते-करते थक जाते हैं, क्योंकि वह आसानी से नहीं मिलता। एक तरह से वह जीवन भर दुर्लभ और अप्राप्य ही बना रहता है, और इस वजह से कुछ लोग पूरी ज़िंदगी भूखे रहते हैं। जो लोग थक जाते हैं और भूख सहन नहीं कर पाते, ऐसे लोग आत्मा के अन्न की तलाश छोड़ देते हैं। वे सब कुछ खाने लगते हैं ताकि उनकी भूख मिट सके।

आख़िर यह आत्मा का अन्न आसानी से क्यों नहीं मिल पाता? वह इतना दुर्लभ और